पाठ-संरचना (Lesson Structure)

4.0 उद्देश्य (Objective)
4.1 परिचय (Introduction)
4.2 यूनानी चिंतन की मुख्य विशेषताएँ (Main Features of Greek Political Thought)
4.3 सोलन (Solon)
4.4 सुकरात (Socrates)
4.5 राज्य की अवधारणा (Conception of State)
4.6 कानून (Law)
4.7 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)
4.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

4.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य छात्रों को प्राचीन यूनानी राजनीतिक सिद्धांत की विशेषताओं और राज्य एवं कानून की अवधारणाओं से परिचित कराना है।

4.1 परिचय (Introduction)

इस अध्याय में तीन तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम, यूनानी राजनीतिक चिंतन की मुख्य विशेषताओं का वर्णन किया गया है। द्वितीय, **सोलन** (Solon), **सुकरात** (Socrates) तथा अन्य प्राचीन यूनानी चिंतकों के चिंतन के आधार पर राज्य की अवधारणा का विश्लेषण किया गया है। तृतीय, इन्हीं चिंतकों के विचारों के आधार पर कानून की अवधारणा की व्याख्या की गई है।

4.2 यूनानी चिंतन की मुख्य विशेषताएँ (Main Features of Greek Political Thought)

राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र में यूनानी चिंतन की देन महत्त्वपूर्ण है। वस्तुतः राजनीतिक चिंतन की शुरुआत यूनानियों से हुई है। यूनानी चिंतन, समस्त पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन का प्रारंभ, पृष्ठभूमि और नींव है। **मैकिलवेन ने** ठीक ही लिखा है, ''राजनीतिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श की जो धारा यूरोपियन जगत में तथा यूरोपियन संस्कृति से प्रभावित देशों में बह रही है, उसका आरंभ यूनानियों से हुआ।''

प्राचीन यूनानी राजनीतिक चिंतन की छह प्रमुख बिशेषताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं।

(i) विलक्षण जिज्ञासा (Extra-ordiniary Curiosity)—यूनानी राजनीतिक चिंतन की उत्पत्ति, न भारतीय चिंतन की तरह श्रद्धा या विश्वास (faith) से हुई है, न **हॉब्स** के चिंतन की तरह संदेह (doubt) से। इसकी उत्पत्ति तो जिज्ञासा से हुई है। जिज्ञासा की भावना यूनानी चरित्र की अद्‌भुत विशेषता है। यूनानी चिंतकों

में बच्चों की तरह अतर्पणीय जिज्ञासा (insatiable Curiosity) थी । उनमें अज्ञात सत्यों की खोज की प्रवृत्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी । **थेल्स** (Thales), एनाक्जीमांडर (Anaximander), **पिथागोरस** (Pythagoras), **हिराक्लीटस** (Heraclitus), **पार्मिनाडिज** (Parmenides), **जिनो** (Zeno) आदि चिंतकों ने ब्रह्मांड की उत्पत्ति और प्रकृति के विषय में चिंतन किया । मिश्र के एक विद्वान के अनुसार यूनान के लोग सदा बालक बने रहते हैं; उनमें कोई बूढ़ा नहीं होता; वे अपनी आत्मा से युवा बने रहते हैं । ("You Greeks are always boys there is not an old man among you; you are young, in your souls." Quoted in C. L. Wayper, political Thought (London : The English University Press, 1954), p. 2) अरस्तू ने कहा है, ''सब मनुष्य जानना चाहते हैं, आश्चर्य की भावना सच्चे दार्शनिक का निर्माण करती है, क्योंकि दर्शन का एकमात्र स्रोत यही है ।''(Aristotle said, "All men want to know, the feeling of wonder makes the true philosopher, for this is the only source of philosophy.") इसी जिज्ञासा की प्रवृत्ति के कारण यूनान, पश्चिमी सभ्यता का एक मुख्य प्रेरणास्रोत है ।

(ii) विवेक में विश्वास (Faith in reason)—यूनानी राजनीतिक चिंतन की दूसरी विशेषता यह है कि यूनानी चिंतकों को विवेक में गहरी आस्था थी । प्रबल जिज्ञासा प्रवृत्ति के साथ-साथ यूनानियों में विवेक-बुद्धि की भी कमी न थी । उनकी मान्यता के अनुसार जीवन और विश्व बौद्धिक है और जिन कानूनों के द्वारा वे संचालित होते हैं उन्हें विवेक के द्वारा जाना जा सकता है । यूनानियों ने ही सबसे पहले ब्रह्मांड (Universe) को विश्व-व्यवस्था (cosmos) की संज्ञा दी जो एक व्यवस्था (order) है और इसलिए नियम या कानून द्वारा शासित होता है । प्रसिद्ध यूनानी कवि **होमर** (Homer) ने देवी-देवताओं के जीवन के पीछे भी एक व्यवस्था देखी जिसके अनुरूप उनका जीवन संचालित होता था । प्राय: सभी यूनानी 'त्रासदी-कार' (tragedians) **होमर** के विचारों से सहमत थे, इसलिए वाइटहेड (Whitehead) ने यूनानियों को 'वैज्ञानिक चिंतन' (Scientific thinking) का सच्चा संस्थापक (true founders) कहा है। मौलिक (essential) को गौण (accidental) से अलग करने की क्षमता और विशेष (particular) में संपूर्ण (universal) को देखने की अंतदृष्टि यूनानियों के अनूठे गुण थे।

(iii) बौद्धिक सत्य में आसक्ति (Attachment to intellectual truth)—प्राचीन यूनानी राजनीतिक चिंतन की तीसरी मुख्य विशेषता बौद्धिक सत्य के प्रति आसक्ति है । यूनानी चिंतकों को सत्यान्वेषण का अनुराग था । यह सच है कि सामान्य जीवन में वे सत्य बोलना आवश्यक नहीं समझते थे । झूठ बोलकर अपना काम निकालने में भी वे नहीं हिचकते थे । क्षणिक लाभ की प्राप्ति के लिए वे दूसरे को ठग भी सकते थे । लेकिन जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में उन्होंने अपने-आपको कभी भी धोखा न दिया । उन्होंने वास्तविकता को स्वीकार किया, चाहे वह कितना भी अप्रिय क्यों न हो ।

(iv) आलोचना की प्रवृत्ति (Instinct for Criticism)—आलोचनात्मक प्रवृत्ति प्राचीन यूनानी राजनीतिक चिंतन की चौथी मुख्य विशेषता है । जीवन की विविध समस्याओं के बारे में मीमांसा करना यूनानियों का प्रिय विषय था । वे किसी भी वस्तु का परखने और तर्क की कसौटी पर कसने के बाद ही ग्रहण करते थे । उन्हें विश्लेषण के प्रति अनुराग था और अस्पष्ट एवं उलझे हुए चिंतन से घृणा थी । वे सटीक परिभाषा को पसंद करते थे । यूनानी चिंतन की इस विशेषता को स्पष्ट करते हुए सुकरात ने ठीक ही कहा है, ''बिना जाँच किए हुए जीवन, सच्चे मनुष्य के लिए जीने लायक नहीं होता है ।'' [Socrates said, "The unexamined life is unlivable for a real human being".]

(v) वाद-विवाद में गहरी आस्था (Great faith in discussion)—प्राचीन यूनानी राजनीतिक चिंतन की पाँचवीं विशेषता यह थी कि आलोचनात्मक प्रवृत्ति के साथ-साथ बौद्धिक वाद-विवाद में यूनानी चिंतकों को गहरी आस्था थी। चूँकि समाज की ओर से यूनानियों को सोचने की स्वतंत्रता प्राप्त थी, इसलिए उनके मानसिक क्षेत्र का असीम विकास हुआ। वे प्रायः लोकतंत्र, अवकाश (Leisure), मनोविश्लेषण, विशेषज्ञ के महत्त्व, क्रांति, आदि पर स्वतंत्र रूप से वाद-विवाद किया करते थे। यूनानियों के बुद्धिवाद की प्रशंसा करते हुए पेरिक्लीज (pericles) ने अपने सार्वजनिक भाषण में कहा था, "हमारे विचार में कार्य के मार्ग में महान बाधक वाद-विवाद नहीं, बल्कि उस ज्ञान की कमी है जो कार्य करने के पहले वाद-विवाद द्वारा प्राप्त किया जाता है।" (Pericles said, "The great impediment to action is in our opinion, not discussion, but the want of that knowledge which is gained by discussion preparatory to action.") डेमोस्थनीज (Demosthenes) ने भी कहा है, किसी राष्ट्र के लिए स्वतंत्र भाषण के अभाव से बढ़कर कोई दूसरा संकट हो नहीं सकता।" (Demosthenes says, "No greater calamity could come upon a people than the privation of free speech.")

यूरिपायडिज (Euripides) की उद्घोषणा के अनुसार "सच्ची स्वतंत्रता यही है कि स्वतंत्र रूप से उत्पन्न मनुष्य जनता को परामर्श देने में स्वतंत्र रूप से बोल सके।" (Euripides proclaims, "This is true liberty, when free-born men, having to advise the public, may speak free.")

बौद्धिक वाद-विवाद में उनकी इतनी गहरी आस्था थी कि अरस्तू ने भी लिखा है, "बहुत-से लोग जिनमें प्रत्येक व्यक्ति एक साधारण पुरुष होता है, जब साथ मिलते हैं तो वे व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि सामूहिक रूप से कुछ अच्छे से प्रायः श्रेष्ठतर होते हैं।" (Aristotle also says, "....the many of whom each individual is but an ordinary person, when they meet together may very likely to be better than the few good, it regarded not individually but collectively"; and never fear the irrational behaviour of the crowd.") वे भीड़ के विवेकहीन आचरण से कभी नहीं डरते हैं। वाद-विवाद के प्रति अपनी दृढ़ आस्था के कारण ही यूनानियों ने वक्तृत्व कला (Rhetoric) की खोज की।

(vi) मानववाद (Humanismt)—प्राचीन यूनानी राजनीतिक चिंतन की छठी विशेषता है उनका मानववाद। यूनानियों को मानवता में अटूट आस्था थी। उनके चिंतन का मुख्य विषय मानव था। उनकी मूर्त्तिकला और चित्रकला का मुख्य उद्देश्य मानव आकृति को चित्रित करने पर केंद्रित था। **होमर** के समय से ही उनके काव्य का मूल विषय मनुष्य है। उनका दर्शन (philosophy) अद्भुत रूप से ब्रह्मांड (cosmos) की समस्या की ओर से मनुष्य की समस्या की ओर प्रेरित हुआ। **सुकरात** की इस मान्यता से **प्लेटो** और **अरस्तू** भी सहमत थे कि "सबसे उत्कृष्ट अनुसंधान इस विषय का अध्ययन करना है कि मनुष्य को क्या बनना चाहिए और उसे किन बातों का अनुसरण करना चाहिए।" (Socrates maintained, "The noblest of all investigations is the study of what man should be and what he should pursue.") संपूर्ण यूनानी साहित्य में **सोफोक्लीज** की यह उक्ति महत्त्वपूर्ण है : "मनुष्य एक अद्भुत वस्तु है—उससे बढ़कर और कोई अद्भुत वस्तु नहीं।" (Sophocles said, "A wonderous thing is man—none more wonderous") यह ठीक ही कहा गया है कि "अन्य राष्ट्रों ने देवताओं, राजाओं, प्रेतात्माओं को बनाया; केवल यूनानियों ने मनुष्य बनाए।" ("Other nations", it has been well said, "made gods, kings, spirits; the Greeks alone made men.") जब **सिसरो** का बेटा एथेंस जा रहा था तब उसने अपने बेटे से कहा, "तुम उन मानवों के दर्शन करने जा रहे

हो जो सर्वोत्तम मानव हैं।" (Cicero was justified in telling his son who was starting for Athens; "you are going to visit men who are supremely men".)

(vii) व्यक्तिवादी (Individualist)—यूनानी चिंतन की सातवीं विशेषता उनका व्यक्तिवाद है। मानव में अपनी गहरी अभिरुचि के कारण यूनानी चिंतकों का व्यक्तिवादी होना स्वाभाविक था। उनके अनुसार अपने विचारों का चिंतन करना, उन विचारों को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करना और दूसरों को कष्ट दिए बिना अपनी अंतरात्मा के अनुसार कार्य करना महत्त्वपूर्ण अधिकार हैं। यह सच है कि अंततोगत्वा व्यक्तिवाद ने ही उन्हें विनाश कर ध्वस्त किया। फिर भी मानव व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान कर और अपने इस विचार को प्रकट कर कि राष्ट्र के प्रति मनुष्य की अनुपम देन अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है, उन्होंने भावी संतति के विकास में अपना महान योगदान दिया।

(viii) समाज का महत्त्व (Importance of society)—अंत में, व्यक्तिवादी होने के साथ-साथ प्राचीन यूनानी राजनीतिक चिंतकों ने समाज के महत्त्व पर भी जोर डाला। वे परंपरा के जाल में अपना दम घोंटना नहीं चाहते थे, परंतु परंपरा (tradition) के प्रति उदासीन नहीं थे। पुराने कानूनों (जिसे ग्रीक में "nomoi" कहा जाता है) के प्रति उन्हें महान आदर का भाव था और वे बर्क (Burke) की तरह उनमें समयानुकूल थोड़ा-थोड़ा और धीर-धीरे ही सुधार करना चाहते थे। जहाँ दूसरे महान व्यक्तिवादी हुए या महान राज्यवादी, यूनानियों ने व्यक्ति के महत्त्व के साथ-साथ राज्य के महत्त्व को भी स्वीकार किया।

इस प्रकार अपनी इन्हीं विशेषताओं—विलक्षण जिज्ञासा, विवेक में विश्वास, सत्य के प्रति आसक्ति, आलोचनात्मक प्रवृत्ति, वाद-विवाद में गहरी आस्था, मानववाद, और व्यक्तिवादी होने के साथ-साथ समुदाय के महत्त्व के स्वीकार– के कारण यूनानी राजनीतिक चिंतन ने भावी पीढ़ियों के चित्र को आकर्षित कर उन्हें प्रेरित किया।

4.3 सोलन (Solon)

यूनानी राज्य और कानून की अवधारणाओं की व्याख्या करने के पहले **सोलन** और **सुकरात** का परिचय जान लेना आवश्यक है।

सोलन एथेंस के छठी सदी ई० पू० का एक प्रसिद्ध कानूनवेत्ता था। इतिहास के आदि काल में एट्टीका (Attica) नामक एक छोटा 'नगर राज्य' था जिसकी राजधानी एथेंस (Athens) थी। होमर के काल में वहाँ राजतंत्र था लेकिन बाद में राजा सिर्फ 'धर्माधिकारी' बन गया। उसे कोई राजनीतिक शक्ति प्राप्त नहीं थी। कुलीनतंत्र का आविर्भाव हुआ। कुलीन लोग शासक बन गए। वे देहात और शहर दोनों क्षेत्रों के लोगों को सताया करते थे। छठी सदी ई० पू० के प्रारंभ में सोलन के प्रयास से वहाँ प्रजातंत्र की स्थापना हुई। उन दिनों की प्रथा के अनुसार एक मनीषी (Sage) को कानून बनाने का भार सौंपा जाता था। **सोलन** ने इसी प्रथा के अनुकूल एथेंस के लिए संविधान बनाया और **लायकरगस** (Lycurgus) ने **स्पार्टा** (sparta) के लिए।

सोलन ने **एथेंस** के लिए जो संविधान बनाया उसमें उसने धनी और गरीबों के हितों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। इसी सामंजस्य या संतुलन को उसने न्याय की भी संज्ञा दी। **सोलन** के अनुसार आर्थिक असंतुलन के कारण ही नागरिक असंतोष, अशांति और उपद्रव की उत्पत्ति होती है। **सोलन** ने संपत्ति के आधार पर नागरिकों को चार वर्गों में विभाजित किया।